A News Letter of Sanskriti University

SANSKRITI UNIVERSITY
FOR EXCELLENCE IN LIFE

प्रतिबिम्ब

Volume:- 1 January 2020

संस्कृति विवि को केंद्र सरकार ने दी इन्क्युबेशन सेंटर खोलने की अनुमति

छात्र-छात्राओं को मिलेगा बड़ा लाभ

मथुरा। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय की उच्चस्तरीय समिति के अनुमोदन के पश्चात छाता स्थित संस्कृति विश्विविद्यालय में इन्क्युबेशन सेंटर खोलने की अनुमति मिल गई है। इंक्यूबेशन सेंटर बिजनेस स्किल्स सिखाने और रिस्क को कम करने का काम करते हैं। इस क्षेत्र में केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत यह पहला सेंटर होगा जिसकी मदद से छात्र-छात्राएं उद्यम से जुड़े अपने प्रोजेक्ट अनुमोदन के लिए भेज सकेंगे। केंद्र सरकार द्वारा संस्कृति विवि को मिली इस उपलब्धि पर संस्कृति विवि के चांसलर सचिन गुप्ता ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि इसमें स्टार्टअप फाउंडर को एक्सपर्ट एडवाइज और गाइडेंस मिलती है।

इंक्यूबेशन सेंटर्स की साख का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बिजनेस की दुनिया में यह माना जाता है कि जिस आइडिया को इंक्यूबेशन सेंटर ने पास कर दिया, यकीनन उसमें पोंटेंशियल होगा। उन्होंने बताया कि अपने क्षेत्र में यह पहला सेंटर होगा जो छात्र-छात्राओं के प्रोजेक्ट के प्रस्ताव स्वीकृति हेतु भेज सकेगा।

संस्कृति विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग विभाग के डीन विंसेट बालू ने इन्क्युंबेशन सेंटर के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि अपने प्रश्वडक्ट या सर्विस को बेचने के लिए, मार्केट का अंदाजा लगाना बहुत जरूरी होता है।

इसके बिना इंटरप्रेन्योर (उद्यमी) प्रोडक्ट बेचने की स्ट्रैटजी नहीं बना सकता है और न ही उसमें जरूरी बदलाव कर पाएगा। इसके लिए उसे इंक्यूबेशन सेंटर में मेंटश्वर और एक्सपर्ट के साथ मिल कर मार्केट के मुताबिक प्रोडक्ट में सुधार अथवा बदलाव करने का कौशल मिलता है।

यहां बिजनेस आइडिया में मार्केट के हिसाब से क्या चेंज किए जाने चाहिए, इसकी सही एडवाइज मिलती है। बिजनेस में अपना नेटवर्क बढ़ाने के लिए कई जगह कॉन्टेक्ट बनाने की जरूरत होती है।

इसमें अन्य इंटरप्रेन्योर्स, इंडस्ट्रियल बॉडी जैसे फिक्की, सीआईआई और कई बिजनेस हाउस में अपने संपर्क बनाने होते हैं। इनका इस्तेमाल बिजनेस को बढ़ाने के लिए किया जाता है। अक्सर बिजनेस न बढ़ने का एक बड़ा कारण होता है कि इंडस्ट्री में संपर्कों का न होना। यह दिक्कत यहां हल हो जाती है।

★ ★ ★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि ने गत वर्ष दाखिल किए 45 से अधिक पेटैंट

एक हजार से अधिक शोधपत्र हुए तैयार, जर्नल में प्रकाशन के लिए हुए स्वीकृत

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2019 के दिसंबर माह तक 45 से अधिक पेटैंट (बौद्धिक संपदा) के मामले दाखिल किए हैं, स्वीकृत होने की प्रक्रिया में हैं। गत वर्ष में विवि के विभिन्न विभागों से जुड़े लगभग एक हजार शोध पत्र जर्नल के लिए तैयार किये गए हैं। शैक्षणिक और शोध की षष्टि से किसी विवि के द्वारा अर्जित की गई बड़ी सफलता है।

विश्वविद्यालय के एक्जीक्यूटिव डाइरेक्टर पीसी छाबड़ा ने जानकारी देते हुए बताया कि विवि द्वारा डोर एक्सेस कंट्रोल सिस्टम, सिस्टम फार इमेजिंग बाइलोजिकल माइक्रोमोलिक्यूल्स, आटोमैटिक इर्रिगेशन सिस्टम, लिक्विड फ्लो मैनेजमेंट सिस्टम, फाल प्रोटेक्शन सिस्टम, डाइग्नोसिस एंड मैटेनैंस सिस्टम फार आटोमोबाइल्स, काम्पैक्ट इलेक्ट्रिसिटी जनरेटिंग डिवाइस, आप्टीमल पावर जनरेटिंग डिवाइस, एक्जास्ट गैस फिल्ट्रेशन सिस्टम, ड्रायर कम वाटर हीटिंग सिस्टम, क्लोजर सिस्टम फार प्रैशर वैसेल्स, सिस्टम एंड मैथड फार एनहांसिंग सिक्योरिटी क्लाउड कंप्युटिंग, हेल्थ मैनेजमैंट डिवाइस फार एक्वाटिक एनिमल्स, कंटेनर क्लीनिंग एपरेटस, इलेक्ट्रि प्रोपल्सन जेट इंजिन, सिस्टम एंड मैथड फार कंडक्टिंग प्वाइंट आफ सेल ट्रांसेक्शन्स, मैथड फार इन्हेबिशन आफ कोरोसन, आटोमैटिक पैराशूट रिलीज सिस्टम, आटोमैटिक फिल्टर क्लीनिंग डिवाइस जैसे महत्वपूर्ण 45 से अधिक पेटैंट (बौद्धिक संपदा) का स्वामित्व हासिल करने लिए दाखिल किए गए हैं।

उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों का किसी भी देश की तरक्की में बड़ा योगदान होता है।

ये वो स्थान हैं जहां नई-नई खोजों के लिए शोध किए जाते हैं। पेटैंट (बौद्धिक संपदा) कानून इन खोजों के दुरुपयोग को रोकने के लिए संरक्षण प्रदान करता है। विश्व में आज पेटैंट (बौद्धिक संपदा) का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है।

यह ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का आधार है। अर्थ व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में इसका महत्व होने के कारण यह उद्यमों की प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करने के लिए उत्तरोत्तर प्रासंगिक व महत्वपूर्ण होती जा रही है।

पेटैंट (बौद्धिक संपदा) में ऐसी वस्तुएं आती हैं जो व्यक्ति द्वारा बुद्धि के प्रयोग से उत्पन्न होती हैं। किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा सृजित कोई मौलिक कृति, डिजाइन, ट्रेडमार्क इत्यादि बौद्धिक संपदा है।

विश्वविद्यालयों द्वारा होने वाली शोध से अर्जित बौद्धिक संपदा का स्वामित्व हासिल करने के लिए पेटैंट कानून के तहत आवेदन किया जाता है।

भौतिक धन की तरह ही बौद्धिक संपदा का स्वामित्व लिया जा सकता है। स्वामित्व के लिए बौद्धिक संपदा कानून बनाए गए हैं। इसके अंतर्गत कोई अपनी बौद्धिक संपदा का नियंत्रण कर सकता है और साथ ही उसका उपयोग करके बौद्धिक संपदा अर्जित कर सकता है।

किसी विवि द्वारा शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान क्षमताओं को मजबूत बनाना और बौद्धिक संपदा अधिकारों में कौशल निर्माण करना महत्वपूर्ण कार्य है। संस्कृति विवि ने इस कार्य में गंभीरता बरतते हुए विशेष उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने बताया कि गत वर्ष विवि के एग्रीकल्चर, मैनेजमैंट, इंजीनियरिंग आदि विभागों में एक हजार से अधिक शोध पत्र लिखे गए हैं। ये शोधपत्र जर्नल में प्रकाशित होने के लिए स्वीकृत और स्कोपस (स्कोपस, एस सी आई, एस एस सी आई) जर्नल में लिस्टेड हो चुके हैं। ईडी छाबड़ा ने बताया कि संस्कृति विश्वविद्यालय के शिक्षकों की टीम द्वारा लगातार विवि को ऊंचाइयां देने के लिए प्रयास किया जा रहा है। आज विवि अपने अनूठे शैक्षणिक कार्यो के लिए देश में अलग पहचान बना चुका है।

संस्कृति विवि में गणतंत्र दिवस पर झंडा रोहण करते डा. राणा सिंह और सुरक्षा प्रभारी सुबोध कुमार।

संस्कृति विवि में धूमधाम से मना गणतंत्र दिवस

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में 71वां गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया।

विवि के कुलपति डा. राणा सिंह ने सुरक्षा प्रभारी सुबोध कुमार के साथ सम्मिलित रूप से झंडा रोहण किया। इस मौके पर डा. राणा सिंह ने कहा कि देश की आन, बान और शान के लिए देश के अनेक वीर जवानों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए है। आज जब हम एक मजबूत गणतांत्रिक देश में स्वतंत्र रूप से सांस लेते हैं तो इन वीर जवानों के प्रति श्रद्धा से अवनत हो जाते हैं। युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे अपने देश की आन-बान और शान का झंडा पूरे विश्व में फहरा दें।

इस मौके पर छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति की अलख जगाने वाले गीतों पर भावपूर्ण नृत्य प्रस्तुत कर सबका दिल जीत लिया। देशभक्ति से ओतप्रोत गीत, नृत्य के इस सत्र में विवि की छात्रा तेजस्वनी शर्मा, एम. भार्गवी नायडू, बी.कुर्थना, बी.संध्या. एल. बी सुझाता, बी. मानसी, दीप्ती राघव, सोनम वर्मा, सोनम, मंजू, छात्र अमित, आशीष, अंकित शेखर सजल, मृदुल और सुनील ने प्रतिभाग किया।

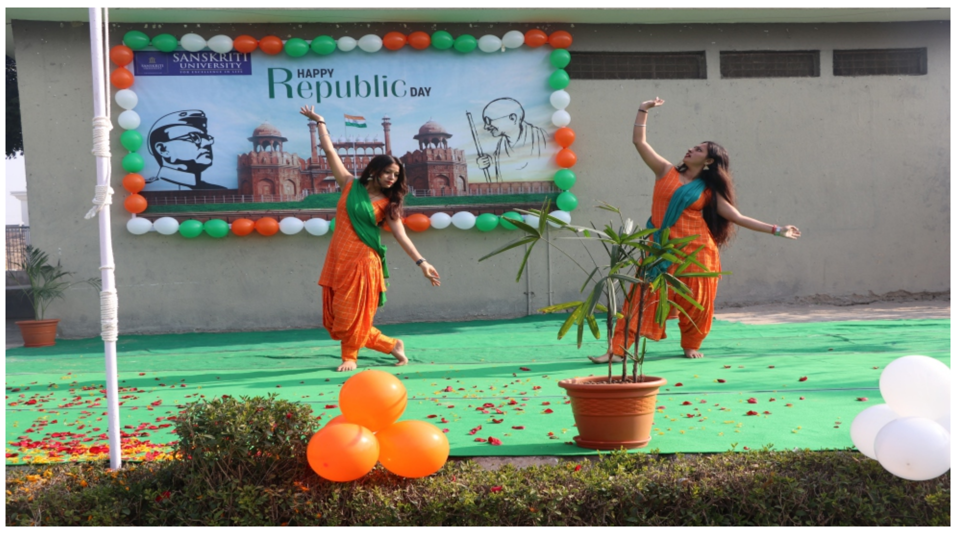

इस मौके पर अकेडमिक डीन अतुल कुमार, भौतिकी विभाग से जुगनू वर्मा, एमबीए से इरफान बशीर, स्कूल आफ मेडिकल एजूकेशन एंड एलाइड साइंसेस की डीन पल्लवी श्रीवास्तव, रजिस्ट्रार पूरन सिंह, पालीटेक्नीक स्कूल के डाइरेक्टर डीआर यादव, फैशन डिजाइलनग विभाग से असिस्टेट लेक्चरर आयुषी पांडे आदि मौजूद रहे। ★ ★ ★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि के नियुक्ति पाने वाले छात्र-छात्राएं प्रसन्न मुद्रा में। साथ में कुलपति डा. राणा सिंह और संस्कृति विवि के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट विभाग के प्रमुख आरके शर्मा।

संस्कृति विश्वविद्यालय के 21 विद्यार्थियों को मिला रोजगार

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में कैंपस प्लेसमेंट के लिए आई ग्रेटर नोएडा स्थित हेडवे ग्लोबल सर्विसेज ने विश्वविद्यालय के 21 छात्र-छात्राओं को विभिन्न पदों के लिए चयनित किया। चयनित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। कंपनी के आपरेशन मैनेजर शारिब सुल्तान ने बताया कि अमूमन हम जहां भी कैंपस प्लेसमेंट के लिए जाते हैं, वहां के विद्यार्थियों में वो समझ और क्या करना है पता नहीं होता। यहां छात्र-छात्राएं पूरी तरह से इंटरव्यू के लिए तैयार मिलते हैं। छात्र-छात्राओं को पता रहता है कि इंटरव्यू में सवालों के जवाब कैसे देने हैं। उनके हित किसमें हैं। यहां के छात्र-छात्रा पूरी तरह से जागरूक हैं। ऐसा तभी होता है जब विद्यार्थियों को इसके लिए विधिवत प्रशिक्षित किया जाता है। कंपनी के एचआर डिपार्टमेंट के अभिमन्यु तिवारी के अनुसार संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का विजन एकदम स्पष्ट देखने को मिला। यह बहुत ही अच्छा संकेत है किसी भी विद्यार्थी के लिए। जब विद्यार्थी को पता होता है कि वो क्या करना चाहता है और वह अपना लक्ष्य कैसे हासिल करेगा, तो उसके लिए सबकुछ बहुत आसान हो जाता है। हेडवे ग्लोबल सर्विसेज कंपनी के अधिकारियों ने बताया कि संस्कृति विवि से एमबीए करने वाले 10 और विभिन्न विषयों में डिप्लोमा डिग्री हासिल करने वाले 11 विद्यार्थियों का विभिन्न पदों के लिए चयन किया गया है। इस मौके पर चयनित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिंह ने तरक्की के मूल मंत्र बताए। ★ ★ ★

संस्कृति विवि में छात्रों ने बताए कचरे को रिसाइकिल करने के तरीके

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में चल रहे स्वच्छता पखवाड़े के तहत छात्र-छात्राओं ने कैंपस में सफा अभियान चलाया। झाड़ू लेकर कचरा साफ किया। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के सभागार में कचरे को रिसाइकिल करने के तरीके बताए। सभागार में उपस्थित विवि के एग्रीकल्चर विभाग के डीन डा. जयदेव शर्मा, एचओडी डा.एनएन सक्सैना ने कहा कि स्वच्छता हमारे घर, सड़क के लिए जरूरी नही होती। यह देश और राष्ट्र की आवश्यकता होती है। भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया स्वच्छ भारत अभियान हमारे देश के प्रत्येक गांव और शहर में प्रारंभ किया गया है। इस अभियान के तहत सभी एकजुट होकर अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ और सुंदर बनाने में जुटे हुए हैं। ऐसा करने से हमारे देश का बुनियादी ढांचा बदलेगा, विदेशों में भारत की छवि बदलेगी। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महात्मा गांधी की जयंती 2 अकटूबर को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। छात्र-छात्राओं ने अपने प्रेजेंटेशन देते हुए बताया कि वो कचरा जो किसी भी देश के लिए मुसीबत बनता है उसको रिसाइकिल कर बहुत सारी काम की चीजें बना जा सकती हैं। अलग-अलग कचरे को रिसाइकिल करने के अलग-अलग तरीके हैं। बहुत सा कचरा ऐसा होता है जिसको रिसाइकिल कर उपयोगी खाद तैयार की जा सकती है। बहुत सारे कचरे का इस्तेमाल कर उपयोगी गैस बना जा सकती है। व्यावसायिक उद्देश्य भी पूरे किए जा सकते हैं। इससे न केवल हम अपने चारों ओर फैले कचरे से मुक्त हो सकते हैं, वरन उसको रिसाइकिल कर अपने जीवन में उपयोगी वस्तुएं भी हासिल कर सकते हैं। इस मौके पर विवि के शिक्षक डा. गौरव, डा. मुकेश ने भी विचार व्यक्त किए। दूसरी ओर अभियान के तहत विश्वविद्यालय के कैंपस वन और टू में शिक्षकों के नेतृत्व में छात्र-छात्राओं ने सफा अभियान चलाया। कैंपस वन में सिविल इंजीनियलरग के छात्र शैलेंद्र कुमार, धर्मेंद्र, रमेश दाहाल, वेदानंद आदि ने सफा अभियान में भाग लिया। ★ ★ ★

संस्कृति विवि में एमएसएमई विभाग द्वारा आयोजित सेमिनार में छात्र-छात्राओं को संबोधित करते एमएसएमई सेंटर आगरा के अधिकारी।

विद्यार्थी स्वयं खड़ा करें अपना उद्यम, बनें सफल उद्यमी

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) विभाग द्वारा विवि के सभागार में एक सेमिनार का आयोजन किया गया।

इसमें भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग केंद्र आगरा से आए अधिकारियों ने संस्कृति विश्वविद्यालय के कृषि विभाग के छात्र-छात्राओं को अपने उद्यम कैसे खड़े करें और उसमें केंद्र किस तरह से उनकी मदद कर सकता है, जैसी उपयोगी जानकारियां दीं।

बैंक अधिकारियों ने बताया कि विद्यार्थियों के लिए बैंकों द्वारा उद्योग स्थापित करने और धन को विभिन्न योजनाओं में निवेश करने का तरीका बताया। एमएसएमई के फील्ड आफिसर एवं इंडस्ट्रियल मोटिवेशन कैंपेन कमेटी की सदस्य राजन यादव ने छात्र-छात्राओं को बताया कि वे प्रोजेक्ट से जुड़ी अधिकतम जानकारी केंद्र से ले सकते हैं। वे अपने उद्यम को कैसे शुरू करें और उसके लिए किससे मदद ले सकते हैं, जैसी जरूरी जानकारियां देते हुए उन्होंने कहा कि आप लोगों को अपना उद्यम शुरू करना चाहिए।

हो सकता है शुरुआती दौर में कठिनाईयों का सामना करना पड़े लेकिन हमारे केंद्र की मदद से आप उसमें एक दिन सफलता

अवश्य हासिल कर लेंगे और सफल उद्यमी बनने का सपना पूरा करेंगे।

पंजाब नेशनल बैंक सैमरी के असिस्टेंट मैनेजर आकाश चौरसिया और वरिष्ठ लिपिक मोहर सिंह ने छात्र-छात्राओं को बैंक की योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। छात्र-छात्राओं ने एजुकेशनल लोन और उद्यम के लिए श्रण के बारे में अनेक सवाल किये।

बैंक अधिकारियों ने विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया और निरंतर संपर्क में रहने की सलाह दी, ताकि वे सरकार द्वारा शुरू की जाने वाली सुविधाओं का लाभ ले सकें। इस मौके पर विवि के कुलपति डा. राणा सिंह ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया। इससे पूर्व संस्कृति विवि के एग्रीकल्चर विभाग के डा. जयदेव शर्मा ने आगंतुकों का स्वागत किया। ★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि में हाथ उठाकर स्वच्छता की शपथ लेते शिक्षक व छात्र-छात्राएं।

संस्कृति विवि में शपथ के साथ शुरू हुआ स्वच्छता पखवाड़ा

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में स्वच्छता पखवाड़े की शुरुआत शपथ के साथ हुई।

शुरु हुए पखवाड़े के तहत गुरुवार को शिक्षकों सहित छात्र-छात्राओं ने अपने जीवन के कुछ क्षण अपने आसपास को स्वच्छ और साफ-सुथरा रखने के लिए शपथ ली।

इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिंह ने शिक्षकों और छात्र-छात्राओं को हाथ खड़ा कर स्वच्छता बनाए रखने की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि गांधी जी का सपना था कि भारत एक स्वच्छ और साफ-सुथरा देश बने।

हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी यही चाहते हैं। प्रधान मंत्री द्वारा स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि हम अपने आसपास को स्वच्छ रखते हैं तो अनेक बीमारियों से भी बचते हैं। इससे हमारे देश की छवि भी सुधरती है। छात्र-छात्राओं ने एक स्वर से अपने आसपास को स्वच्छ और सुंदर बनाने का संकल्प लिया। सभी ने शपथ ली कि मैं गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करूंगा. मैं शपथ लेता हूं कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूंगा और उसके लिए समय दूंगा।

हर वर्ष सौ घंटे यानी हर सप्ताह दो घंटे श्रम दान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूंगा।

मैं न गंदगी करूंगा, न किसी और को करने दूंगा. सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मोहल्ले से, मेरे गांव से और मेरे कार्यस्थल से शुरुआत करूंगा. मैं यह मानता हूं कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं उसका कारण यह है कि वहां के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं।

इस विचार के साथ मैं गांव गांव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूंगा। मैं आज जो शपथ ले रहा हूं वह अन्य सौ व्यक्तियों से भी करवाऊंगा, ताकि वे भी मेरी तरह सफाई के लिए सौ घंटे प्रयास करें। मुझे मालूम है कि सफाई की तरफ बढ़ाया गया एक कदम पूरे भारत को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने आशा व्यक्त की कि हर छात्र-छात्रा इस शपथ पर कायम रहेगा और साफ सफाई के प्रति समर्पित होकर स्वच्छ भारत निर्माण में सहयोग देगा। ★ ★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि के छात्र-छात्राएं लोहड़ी पर घेरा बनाकर नाचते हुए।

संस्कृति विवि में छात्र-छात्राओं ने नाच-गाकर मनाई लोहड़ी

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के मैदान में सोमवार रात को छात्र-छात्राओं ने जमकर नाच-गानों के साथ लोहड़ी का त्योहार मनाया। नाचते हुए जलती हुई अग्नि के चक्कर लगाए और सामूहिक रूप से पारंपरिक गीत 'सुंदर मुंदरिये नी', गाया। छात्र-छात्राओं ने लोहड़ी की तैयारियां शाम से ही शुरू कर दी थीं। मैदान में लकड़ियां एकत्र कर लोहडी तैयार की गई थी। पारंपरिक तौर पर लोहड़ी फसल की बुवाई और उसकी कटाई से जुड़ा एक विशेष त्योहार है। इस मौके पर पंजाब में नई फसल की पूजा करने की परंपरा है। इस दिन चौराहों पर लोहड़ी जलाई जाती है। इस आग के पास पुरुष लोग भांगड़ा करते हैं, वहीं महिलाएं पंजाब का प्रसिद्ध नृत्य गिद्दा करती हैं। इस दिन तिल, गुड़, गजक, रेवड़ी और मूंगफली का भी खास महत्व होता है। विश्वविद्यालय में पंजाबी छात्र-छात्राओं में सुबह से ही त्योहार को लेकर विशेष उत्साह था। उनके साथ अन्य विद्यार्थियों ने भी समान रूप से मिलकर त्योहार मनाया। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिंह ने लोहड़ी में अग्नि प्रज्ज्वलित की और इसी के साथ ही छात्र-छात्राओं ने नृत्य करना शुरू कर दिया। रात के साथ ही भांगड़ा की धमाचौकड़ी शुरू हो गई। सभी ने एक दूसरे को लोहड़ी की शुभकामनाएं दीं। विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने सभी को लोहड़ी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ये त्योहार हमारे जीवन में उत्साह और जीवंतता भरते हैं। हम सभी को एक साथ मिलकर त्योहारों में भाग लेना चाहिए।

संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम में भाग लेने आए जिले के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक।

संस्कृति विवि में शिक्षकों ने जाने पढ़ाने के प्रभावी तरीके

मथुरा। संस्कृति विवि ने हर वर्ष की तरह इस बार भी अपने यहां फैकल्टी डवलपमेंट कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में जिले के माध्यमिक कालेजों के शिक्षकों को आमंत्रित किया गया। शिक्षण कार्य के उत्तरोत्तर विकास के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने शिक्षकों को पढ़ाने के उन मनोवैज्ञानिक तरीकों से अवगत कराया जिससे शिक्षण कार्य को और प्रभावी बनाया जा सके। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती मां की प्रतिमा के माल्यार्पण और प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। कार्यक्रम में विषय की आवश्यकता और उपयोगिता पर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिंह ने विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होने स्क्रीन पर प्रख्यात प्राथमिक शिक्षिका ममता अंकित के यू ट्यूब वीडियो से उनके बच्चों को पढ़ाने के प्रभावशाली तरीके से शिक्षकों को अवगत कराया। डा. राणा ने बताया कि विभिन्न सर्वेक्षणों से यह सामने आया है कि किताब पढ़कर पढ़े हुए का सिर्फ दस प्रतिशत ही याद रहता है, कक्षा में शिक्षकों का लेक्चर सुनकर बच्चे पढ़ाए हुए का सिर्फ 20 प्रतिशत ही याद रख पाते हैं। पाता है। लेकिन गतिविधियां के माध्यम से जब बच्चों को कुछ सिखाया जाता है तो उसे बच्चे कभी भूलते नहीं हैं। पढ़ाने का यह तरीका बहुत कारगर है। एक्सीलेटर कंपनी से जुड़े इंजीनियर और एमबीए सौरभ ने बताया कि जो पढ़ाई हमने पढ़ी थी, उसमें और आज की पढ़ाई में जमीन-आसमान का अंतर आ चुका है, लेकिन बहुत से स्कूलों में पढ़ाने का तरीका आज भी वही है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को बच्चों

की रुचि को समझने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें उसी पढ़ाई के लिए प्रेरित करना चाहिए जो वह अच्छी तरह से पढ़ते हैं। सौरभ ने कहा कि बहुत से बच्चे बहुत से विषय इसलिए नहीं पढ़ते कि वे ये समझते हैं कि जिस पढ़ाई को वे पढ़ रहे हैं वो उनके किसी काम नहीं आने वाली, जबकि ऐसा होता नहीं। पढ़ाई हमेशा काम आती है, किसी न किसी रूप में। अक्सर इंटर की कक्षा के बच्चों को पता ही नहीं होता वे पढ़ने के लिए क्या विषय चुनें। शिक्षक इस मामले में गंभीरता बरतें तो बच्चे सही दिशा में और अपने लिए सही पढ़ाई का चयन कर पाएंगे। राजपाला फाउंडेशन के फाउंडर और मनोवैज्ञानिक डा. सतीश कौशिक ने शिक्षकों से लंबी बात की।

उन्होंने कहा कि शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के बारे में बारीक जानकारी हासिल करनी चाहिए, तभी वे उनको अच्छी तरह से समझाने में कामयाब हो पाएंगे। पढ़ाने से पहले शिक्षकों को यह समझना चाहिए वे किसे पढ़ा रहे हैं। इसके लिए बच्चों की च्वाइस, रिएक्शन और रिस्पांस पर ध्यान देना होगा। उन्होंने अपने विस्तृत सैशन में शिक्षकों से कुछ गतिविधियां भी कराई। एक्सिलेटर कंपनी के आदित्य कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया। समन्वयक का दायित्व संस्कृति विवि के एडमीशन सेल से ज्योति वशिष्ठ ने निर्वाह किया। ★ ★ ★ ★ ★

चौथी औद्योगिक क्रांति में शामिल होने को तैयार हों विद्यार्थी

संस्कृति विवि में 'इंडस्ट्री 4.0 एंड एप्लीकेशंस' विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित 'इंडस्ट्री 4.0 एंड एप्लीकेशन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में आए विशेषज्ञों ने छात्र-छात्राओं को चौथी औद्योगिक क्रांति के उन पहलुओं को बताया जिससे मानव जीवन का सीधे-सीधे जुड़ाव है। कहा गया कि मनुष्य के जीवन की बदलती वर्तमान जरूरतों और भविष्य की जरूरतों के लिए औद्योगिक तकनीक में क्या और कैसे बदलाव आ रहे हैं और कैसे बदलाव होने चाहिए यह सोचना आज के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता है। संगोष्ठी में एअरकान सिस्टम प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक केडी सिहं ने विद्यार्थियों से कहा कि आपका अविष्कार औद्योगिक क्षेत्र में क्रांति ला सकता है। कुछ नया और उपयोगी करने की सोच के साथ सारी दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है। चाहे वह ऊर्जा के विकल्प तलाशने का क्षेत्र हो या फिर कचरे से ऊर्जा पैदा करने का नवीन तरीका, दोनों ही क्षेत्रों में विद्यार्थियों को करने के लिए बहुत कुछ है। आपका अविष्कार समाज में क्रांति ला सकता है। विद्याथियों को सिर्फ आज के बारे में ही नही सोचना है, उन्हें भविष्य की जरूरतों के बारे में भी सोचना है। उन्हें ऐसा कौशल हासिल करना है, ताकि ऐसी खोज कर सकें जिससे न केवल वातावरण सुरक्षित रहे वरन किफायती डिवाइस तैयार कर सकें। हर क्षेत्र में ऐसे अविष्कार किए जा रहे हैं, जिनसे ऊर्जा, समय और धन सबकी बचत करने में हम सफल हो पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज जो भी समस्या है, वह तो है ही, लेकिन इसका दूसरा पक्ष है कि समस्या हमें मौका दे रही है कुछ उपयोगी करने का। कैंटियर सिस्टम लिमिटेड कंपनी के निदेशक आलोक वार्ष्णेय ने एक युवक का उदाहरण देते हुए बताया कि उसने कैसे चीनी उत्पाद से प्रतिस्पर्धा करने वाला किफायती और आधुनिक चेन पुली सिस्टम बनाकर व्यावसायिक सफलता हासिल की। उन्होंने कहा कि इंडस्ट्री 4.0 का मतलब है स्मार्ट इंडस्ट्री। चौथी औद्योगिक क्रांति का हिस्सा बनने के लिए उत्पादन, आटोमेशन, डाटा केंद्रित वातावरण में बदलाव लाने होंगे। उन्होंने बताया कि जिस उत्पादन को महीनों में परंपरागत तरीके से किया जाता था वह आज चंद घंटों में अत्याधुनिक तकनीक के माध्यम से किया जाने लगा है। जीवन शैली स्मार्ट हो चुकी है। स्मार्ट टेक्नोलाजी ने सबकुछ आसान कर दिया है। और अब स्मार्ट सिटी की स्थापना हो रही है, हो चुकी है। मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र में लगातार नया अविष्कार हो रहा है। आटिफिशियल इंटेलीजेंसी ने सभी क्षेत्रों में क्रांति ला दी है। हमारे विद्याथियों को भी इस ओर आगे बढ़कर उद्यम खड़े करने होंगे। अपने आप को तैयार करें क्योंकि बहुत तेजी से दुनिया में उद्योग की तकनीकि बदल रही है। संगोष्ठी के प्रारंभ में संस्कृति विश्वविद्यालय के अकेडमिक डीन डा. अतुल कुमार चौहान ने विषय संबंधी जानकारी दी। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिह ने चौथी औद्योगिक क्रांति के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। इश्रे दिल्ली चैप्टर की सेक्रेटरी पूणमा शर्मा ने वर्तमान जरूरतों के लिए आवश्यक शिक्षा के बारे में बताया।

देश के विश्वविख्यात पांच सितारा और पांच सितारा डीलक्स होटलों में नौकरी पाने वाले संस्कृति विवि के होटल मैनेजमेंट के विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ प्रसन्न मुद्रा में।

संस्कृति विवि के होटल मैनेजमेंट के छात्रों का शतप्रतिशत प्लेसमेंट

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय से इस वर्ष होटल मैनेजमेंट की शिक्षा पूरी करने वाले सभी विद्यार्थियों को देश के नामी गिरामी फाइव स्टार और फाइव स्टार डीलक्स होटलों में अच्छे वेतनमान पर नौकरी हासिल हुई है। साक्षात्कारों की लंबी प्रक्रिया में सभी विद्यार्थी खरे उतरे। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने नियुक्ति हासिल करने वाले विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए विभागीय शिक्षकों की सराहना की है। संस्कृति विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ टूरिज्म एंड हास्पिटलिटी के डीन डा. एम.के.शर्मा, विभागध्यक्ष पीयूष झा ने बताया कि जयपुर के पांच सितारा डीलक्स होटल ली मैरेडियन ने विवि के अनिल शर्मा, ललित कुमार, मनमोहन, पकंज उपाध्याय, राहुल, सत्यम राय व शिवम कुमार का चयन कर नियुक्ति पत्र सौंपा है। दिल्ली के पांच सितारा डीलक्स होटल हयात ने मोहम्मद शाहिद, जयपुर के पांच सितारा होटल फोर पाइंट बाई शेरेटन ने जयवीर सिंह, राहुल खान, अरुन चौहान, सुखवीर व जानू कुमार, उदयपुर के पांच सितारा होटल ताज अरावली ने संजय शर्मा, निमडेन का चयन किया है। इसी प्रकार उदयपुर के पांच सितारा होटल रैडिसन ब्ल्यू ने प्रियांशु पांडे, शंकर शर्मा, आदर्श शर्मा, विवेक दुबे, भूपेंद्र कुमार, जयपुर के पांच सितारा होटल होलीडे इन, सिटी सेंटर ने जितेंद्र कुमार, परवेज तोमर, आदर्श, दीपक व प्रवीन ठाकुर को नौकरी दी है। चयनित छात्रों व छात्रा निमडेन ने बताया कि संस्कृति विवि के विभागीय शिक्षकों ने उन्हें जो शिक्षा दी और व्यवहारिक ज्ञान अर्जित कराया उसके कारण उन्हें इंटरव्यू के दौरान किसी दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा। चयनकर्ता हमारे कौशल से पूरी तरह संतुष्ट थे, यही वजह कि उन्होंने हमारा चयन किया। स्कूल आफ टूरिज्म एंड हास्पिटलिटी के शतप्रतिशत छात्रों के प्लेसमेंट पर हर्ष व्यक्त करते हुए विवि की विशेष कर्याधिकारी मीनाक्षी शर्मा ने कहा कि विवि जिस सोच के साथ स्थापित हुआ है उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसके लिए सभी शिक्षक बधाई के पात्र हैं।

संस्कृति विवि के चार छात्रों को जस्ट डायल में मिली नौकरी

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के एमबीए का चार छात्रों का प्लेसमेंट बहुचर्चित जस्ट डायल कंपनी में हुआ है। जस्ट डायल कंपनी द्वारा ग्राहकों को हर क्षेत्र में टेलीफोन माध्यम से सेवाएं प्रदान कराई जाती हैं।

छात्रों के चयन पर हर्ष व्यक्त करते हुए विवि की विशेष कार्य अधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने चयनित छात्रों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। चयन प्रक्रिया के दौरान कंपनी की एचआर सुरभि ने छात्र-छात्राओं को कंपनी के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि जस्ट डायल एक टेलीफोन सर्विस है, जो ग्राहकों को टेलीफोन के माध्यम से सेवाएं प्रदान करती है। वेबसाइट के माध्यम से इसकी सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

कंपनी का अपना एक एप भी है। इसकी एप्लीकेशन के द्वारा ग्राहक अधिक सूचनाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

इसके द्वारा ग्राहक विभिन्न शहरों के विक्रेता और व्यवसाय की जानकारी भी हासिल की जा सकती है।

कंपनी को वी.एस.एस. मनी ने 1996 में स्थापित किया था। साक्षात्कार के साथ पूरी हुई सघन चयन प्रक्रिया में संस्कृति विवि के एमबीए के चार छात्रों सदाशिव, चंद्रशेखर लवकेश और अमित ने सफलता हासिल की।

इन चारों छात्रों के चयन पर विवि के कुलपति डा. राणा सिंह ने हर्ष व्यक्त करते हुए बताया कि छात्र-छात्राओं ने अपनी रुचि के अनुसार चयन प्रक्रिया में भाग लिया और साबित कर दिखाया कि वे ज्ञान और कौशल में कंपनी की सभी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हैं।

चयनित छात्रों के कंपनी के अधिकारी व विवि के कुलपति डा. राणा सिंह।

उन्होंने चयनित छात्रों को उज्ज्वल भविष्य के प्रति शुभकामनाएं दीं।

जस्ट डायल एक टेलिफोन सर्विस है जो ग्राहक को टेलीफोन के माध्यम से सेवाएं प्रदान करती है। आप इसकी वेबसाइट से भी यह सुविधा प्राप्त कर सकते है। जस्ट डायल का पूरी तरह से लाभ उठाने के लिए जस्ट डायल ऐप भी उपलब्ध है। इसकी एप्लीकेशन के द्वारा आप अधिक सूचनाओं को प्राप्त कर सकते है। जस्ट डायल ऐप से आप विभिन्न शहरों के विक्रेता और व्यवसाय की जानकारी ले सकते है। ★ ★ ★ ★

पे मी कंपनी में नौकरी पाने वाले संस्कृति विवि के छात्र-छात्राएं।

संस्कृति विवि के छात्र-छात्राओं को पे मी कंपनी में मिला प्लेसमेंट

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के कैंपस प्लेसमेंट के लिए लगातार दिग्गज कंपनियां रही हैं। इसी क्रम में विवि के बी.सी.ए., बी.काम., एमबीए और बीबीए के 19 छात्र-छात्राओं को पे मी इंडिया द्वारा चयन की लंबी प्रक्रिया के बाद प्लेसमेंट दी गई।

इस अवसर पर कंपनी की एचआर शानी ने बताया कि पे मी इंडिया फायनेंशियल टेक्निकल आर्गेनाइजेशन है जो कार्पोरेट कर्मचारियों को एडवांस सेलरी लोन, इंस्टाट पे डे लोन, शार्ट टर्म कैश लोन बहुत ही कम ब्याज दर पर उपलब्ध कराती है। उन्होंने बताया कि संस्कृति विवि के छात्र-छात्राओं ने साक्षात्कार के दौरान अपनी श्रेष्ठ प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। हमारी जरूरतों पर ये छात्र-छात्राएं खरे उतरते हैं। उल्लेखनीय है कि कंपनी द्वारा विवि की छात्रा सीमा कुमारी, ऋतु अग्रवाल, नेहा चौधरी, अंजली सिसौदिया, ऋषिका पाठक, चेतना सिह, योगिशा अग्रवाल व छात्र करन प्रताप सिह, गौरव, मनीष यादव, अभिषेक शर्मा, मोहित कुमार, आनंद कुमार तिवारी, कुणाल गोला, आर्यन गुप्ता, अमन कुमार तिवारी, निश्चय शर्मा, चेतन सिह, पवन कुमार, कार्तिकेय शर्मा का चयन किया है। चयनित विद्यार्थियों को बधा देते हुए विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने कहा कि संस्कृति विवि शैक्षणिक पाठ्यक्रम ऐसा तैयार किया गया है ताकि बच्चे कंपनियों की वर्तमान जरूरतों पर खरे उतर सकें। ★ ★ ★ ★ ★

संस्कृति विवि ने छात्र-छात्राओं को दिखाई भविष्य की राह

मथुरा। देश भर के छात्र-छात्राओं ने संस्कृति विश्वविद्यालय की हेल्पलाइन पर फोन कर अपने भविष्य के लिए उपयोगी जानकारियां हासिल कीं। संस्कृति विवि की काउंसलिंग टीम और विवि के कुलपति ने छात्र-छात्राओं की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उनके लिए उपयोगी पाठ्यक्रम और उच्च शिक्षा लेकर स्वयं का उद्यम खड़ा कर कैसे स्टार्टअप कर सकते हैं, इसकी जानकारी दी। देश का युवा अपने भविष्य को लेकर आज पूरी तरह से सजग है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस बात से मिलता है कि वह हर उस जगह से संपर्क स्थापित कर रहा है जो उसे उसके भविष्य निर्माण को लेकर सही गाइड कर सके। पिछले कुछ समय से संस्कृति विश्वविद्यालय की हेल्प लाइनों पर ऐसे अनेक फोन प्राप्त हुए हैं, जिनमें 12वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं ने अपने आगे की पढ़ाई के संदर्भ में सवाल पूछे। विवि की काउंसलिंग टीमों के सदस्यों ने छात्र-छात्राओं से विस्तार से बातचीत करने के दौरान यह जानने की कोशिश की उनकी रुचि किसमें है। अधिकांश युवा चाहते हैं कि वे ऐसे पाठ्यक्रम को अपनाएं जिसको पढ़कर वे अच्छी नौकरी हासिल कर सकें। कुछ युवा ऐसे भी थे जिन्होंने स्वयं आगे बढ़कर कहा कि हम अपना उद्यम शुरू करना चाहते हैं, उन्होंने अपने रुचि के व्यवसाय भी बताए। काउंसलर ने इन छात्रों को वे पाठ्यक्रम बताए जिसका अध्ययन कर वे अपने उद्यम को खड़ा करने में सफल हो सकते हैं। विवि के कुलपति डा. राणा सिंह ने बताया कि ब्रज क्षेत्र के दो छात्र ऐसे भी थे जिनकी रुचि अपने पैतृक कृषि व्यवसाय को आधुनिक रूप देकर और लाभदायक बनाने की थी। कुलपति राणा सिंह ने इन छात्रों को प्रोत्साहित कर बताया कि कैसे वे खेती की नई-नई तकनीक का इस्तेमाल कर अपनी खेती से बड़ी आय कर सकते हैं और प्रगतिशील किसान बन सकते हैं। इसके लिए उनको विधिवत उच्च शिक्षा लेनी चाहिए। उन्होंने छात्रों को जानकारी दी कि संस्कृति विवि ने कृषि कार्य की प्रोन्नति और कौशल हासिल करने के लिए उपयोगी पाठ्यक्रम चला रखे हैं। इनका अध्ययन कर वे स्वयं को और अपनी खेती को उन्नत कर सकते हैं। विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने युवाओं की जागरूकता पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि इससे साफ होता है कि हमारा देश बदल रहा है। ये युवा ही देश का भविष्य बनाएंगे। सिर्फ जरूरत इनको सही दिशा दिखाने की है। हमने यही सोचकर इन युवाओं की सहायता के लिए काउंसलिंग की टीमें गठित की हैं। ये टीमें लगातार युवाओं को उनके भविष्य के लिए जागरूक करने का काम कर रही हैं।

★★★★★